उपसंहार

उपसंहार

हिन्दी के बहुचर्चित और प्रगतिशील समीक्षक एवं कथाकार डॉ.देवेश ठाकुर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का वस्तुपरक आकलन का प्रयास मैंने प्रथम अध्याय में किया है। प्रारम्भ में देवेश जी का व्यक्ति परिचय प्रस्तुत किया है। देवेश जी का आरम्भिक जीवन आर्थिक कठिनाइयों से जूझने में बीत गया है। पिताजी पुलिस मैन थे,पिताजी अवकाशप्राप्त होने पर परिवार का उत्तर दायित्व देवेश जी के कन्धोपर आ पडा। परिवार के बोझ को सम्भालकर परिश्रम के साथ अपनी शिक्षा पूरी की। नजीबाबाद एवं देहरादून में उनकी एम.ए.तक की पढाई हुअी। परिवार के बोझ का वहन करने के लिए पत्नी को भी नौकरी के लिए उन्होंने मजबूर किया। और पूरे परिवार को बम्बई में अपने साथ रखा। लेकिन परिवार के सदस्यों की टुच्ची वृत्ति के कारण परिवार से सम्बन्ध विच्छेद करना पडा।

देवेश जी के व्यक्तित्व का बाह्यपक्ष उनकी मुखाकृति से प्रकट होता है कि उनके जैसे साधारण व्यक्ति ने जिस प्रकार जिन्दगी की विषम तथा संघर्षमयी परिस्थितियों से टकराकर अपने वर्तमान का निर्माण किया। जिन्दगी की विरान घाटियों और बीहड मार्गों का अध्यवसाय ,परिश्रमी वृत्ति ,संघर्षशीलता, आत्मविश्वास और प्रतिभा के बल पर पार करनेवाले देवेश जैसे बाहर से गंभीर और सोच में डूबे हुअे लगते है। वे भीतर से उतने ही कोमल,सरल,संवेदनशील और स्नेहील है। उनकी वेशभूषा,आहार-व्यवहार लोगों को आकर्षित कर लेती है। आंतरिक पक्ष के अन्तर्गत उनके गुण,स्वभाव,रूचि,प्रतिभा,मानसिक क्रियाकलाप आदि का विवरण मैंने दिया है। वे स्पष्ट मुखर तथा हँसमुख है। सादगी,सरलता, स्पष्टवादिता,खुलापन,संघर्षशीलता ,अध्यवसाय,महत्वाकांक्षा आदि उनके जीवन की मुलभूत विशेषताएँ है। वे स्वभाव से ईमानदार और स्वाभिमानी है। देवेश जी बहुत ही परिश्रमी है,उनकी परिश्रम करने की शक्तिपर आश्चर्य चकित

हो जाना पडता है। वे निर्णयक्षम और जोखिमप्रिय व्यक्ति तथा जिन्दादिल दोस्त है।

देवेश जी की उपन्यास,कहानी,कविता,एकांकी,निबन्ध,शोध-ग्रन्थ आदि सभी रचनाओं में मानवतावादी दृष्टि प्रकट हुयी है। जीवन की अनुभूतियों को अपने साहित्य में चित्रित करने में वे सफल रहे हैं। उनका सम्पादन कार्य तथा अनेक पत्रिकाओं में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आज तक वे अपनी प्रगतिशील तथा रचनाधर्मी दृष्टिकोण के साथ रचना-प्रक्रिया में रत है। इसी अध्ययनशीलता के कारण उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

द्वितीय अध्याय में मैंने ` प्रिय शबनम ` की उपन्यास की कथावस्तु को प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास एक पत्रात्मक शैली में लिखा गया है। इसमें नायक मंगल तथा नायिका शबनम का अन्तर्बाह्य जीवन पत्रात्मक ढंग से प्रस्तुत हुआ है। पत्रशैली में लिखे इस उपन्यास में कहीं भी अस्वाभाविकता नहीं है। ` प्रिय शबनम ` की कथावस्तु में लेखक ने मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की त्रासदियों और उनका यथार्थ जीवन प्रगट किया है। उसमें लेखक सफल हुए है। दो युवा-प्रेमियों के एकत्र आने और वर्गीय मानसिकता के कारण अलग होने की समस्या को सफलता से चित्रित किया है। कथावस्तु में लेखक ने मंगल की मानसिकता का उभरने तक चित्रण किया है। बचपन से अभाव और संघर्ष में पले-बढे मंगल का मध्यवर्गीय मन महानगर की उच्चवर्गीय सभ्यता से मेल नहीं खाता।

` प्रिय शबनम ` की कथावस्तु में लेखक ने मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की गाथा के साथ मार्क्सवादी वैचारिकता को भी हमारे सामने रखा है। एक कमजोर क्षण मनुष्य का जीवन नष्ट कर देता है,इसका प्रमाण है ` प्रिय शबनम ` उपन्यास। लेखक ने निम्नवर्ग से लेकर उच्चवर्ग के परिवेश तथा परिस्थिति का वृत्तान्त दिया है। उपन्यास की नायिका ` शबनम ` है। जिसका नाम उपन्यास के शीर्षक के रूप में दिया है। दस वर्ष बाद नायक मंगल अपनी आपबीति शबनम को पत्र के माध्यम से लिखता है। शुरु में वह उसे ` प्रिय

शबनम` से सम्बोधित करता है। इसमें शबनम के प्रति मंगल के मन में प्रेम की भावना है तथा उपन्यास में शुरु से लेकर अन्त तक पाठक के मनमें भी शबनम के प्रति प्रेम की भावना बनी रहती है। इसी कारण उपन्यास का शीर्षक ` प्रिय शबनम ` आकर्षक सार्थक एवं उचित बन पडा है।

` प्रिय शबनम ` उपन्यास के प्रमुख पात्र,तथा गौण पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं की चर्चा मैंने तृतीय अध्याय में की है। नायक तथा प्रमुख पुरूष पात्र मंगल बम्बई के सेंट कॅथालिक कॉलेज में हिन्दी के प्राध्यापक है। मंगल पहाडी प्रदेश कोटद्वार नामक एक छोटे कस्बे में रहनेवाला युवक ,अपने ही कॉलेज की चतुर्थ वर्ष की छात्रा शबनम से वह प्यार करता है। परन्तु अपनी कुण्ठित मनोवृत्ति तथा बचपन की सहेली लाजो के प्रति शारीरिक आकर्षण के कारण शबनम से सम्बन्ध विच्छेद कर लेता है। द्वन्द्वात्मक स्थिति में वह गलत निर्णय लेकर अपने जीवन में आयी हरियाली को ठुकराता है। बचपन से उसकी आर्थिक स्थिति कभी अच्छी नहीं रही इसी कारण उसके मनमें हमेशा परिस्थिति की न्यूनता रही है। भावना में बहनेवाला युवक मंगल कभी कभी स्वप्नों की दुनिया भी देखता है। मंगल की माँ और लाजो के झगडों में मंगल पिसता हुआ दिखाई देता है। एक देहाती युवक मंगल बम्बई में आकर पार्टी का काम करता है। इस प्रकार उपन्यास का प्रमुख पुरूष पात्र मंगल मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला ,संघर्ष करके ऊपर उठनेवाला तथा अपने जन्मजात संस्कारों से मुक्ति के प्रयास कर अभिजात संस्कारों को पाने की चेष्टा करनेवाला व्यक्ति है।

उपन्यास की नायिका तथा प्रमुख स्त्री पात्र है ` शबनम ` जो उच्चवर्ग की तथा परिष्कृत संस्कारों से युक्त है। वह वर्गीय अभिजात्य के प्रति घृणाभाव रखनेवाली युवती है। उसका बहुमुखी व्यक्तित्व पाठकोंको आकर्षित कर लेता है। वह एक निस्सीम प्रेमिका है। मंगल से प्यार की भावना,पिताजी से आदर्श भावना,बेटे से स्नेह की भावना तथा पतिव्रता का रूप उसमें दिखाई देता है। इस प्रकार शबनम एक आदर्श प्रेमिका,आदर्श पुत्री,आदर्श पतिव्रता और आदर्श

माता है। उपन्यास में महत्त्वपूर्ण पात्र के अन्तर्गत लाजो, शम्मूदा तथा मंगल की माँ का चित्रण हुआ है। लाजो उपन्यास में संघर्ष निर्माण करनेवाली स्त्री पात्रा है। उसका चरित्र निम्न कोटिका है। प्रदर्शनप्रिय लाजो मुहँफट एवं झगडालु औरत है। उच्छृंखल तथा फूहड नारी होने के कारण नायक मंगल का उसके कारण पतन होता है। इस प्रकार अशिक्षित व्यक्ति भी कभी अत्यन्त सहृदयी, स्नेही प्रकृति के होते देखे गये है, पर लाजो में उस प्रकार का कोई कण भी नहीं दिखाई देता।

शम्मूदा पार्टी के प्रतिबध्द कार्यकर्ता, क्रान्तिकारी नेता सच्चा जनसेवक तथा देशभक्त की एक मिसाल है। गलित परम्पराओं के विरोधी शम्मूदा भ्रष्ट व्यवस्था को मिटाना चाहते है। उसके लिए व्यक्तित्व और कृतित्व में संगति आवश्यक मानते हैं। इस प्रकार हम पाते है कि शम्मूदा का व्यक्तित्व परिपूर्ण है। उनमें दृढता, ईमानदारी, सक्रियता और अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठा है। मंगल की माँ आत्मसम्मानी तथा धर्मप्राण नारी है। उसके मनमें सन्तान के प्रति अटूट प्यार है। वह कठोर एवं निश्चयी है।

गौण पात्रों के अन्तर्गत मंगल के पिता, शबनम के पिता, मूलचंद, लाजो की माँ, बच्चन, आस्था और कॅप्टन अमर घई को रखा है। मंगल के पिता और मूलचंद निम्न श्रेणी के तथा गिरे हुअे पात्र हैं। आस्था मंगल तथा पाठकों के मन में फिरसे आस्था निर्माण करने की प्रेरणा देती है।

` प्रिय शबनम ` में कथोपकथन का सफल एवं सार्थक प्रयोग हुआ है। देवेश जी ने उपन्यास के प्रमुख पुरूष पात्र मंगल के माध्यम से कथानक को प्रस्तुत किया है। कथोपकथन के छोटे-बडे संवादों के माध्यम से उपन्यास को विकास की ओर अग्रसर किया है। कथावस्तु के विकास में कथोपकथन का महत्त्वपूर्ण योग रहा है। लेखक ने कथानक के विकास के साथ-साथ पात्रों के चरित्र चित्रण तथा पात्रों की अर्न्तमनोवृत्तियों को खोलने में भी कथोपकथन का उचित प्रयोग किया है। लेखक ने उपन्यास का उद्देश्य तथा वातावरण निर्मिति के लिए कथोपकथन

का प्रयोग करके उपन्यास में सजीवता लाने में सफलता पाई है।` प्रिय शबनम ` के संक्षिप्त कथोपकथन उपन्यास में नाटकीयता उत्पन्न करते हैं। पारीवारिक कथोपकथन बहुत हीसजीव लगते हैं। कथोपकथन पात्रानुकूल बन पडे हैं। बौध्दिक, अनपढ तथा गँवार पात्रों के मुँह से उनके विचारानुसार भाषा का प्रयोग किया है। उपन्यास में कथोपकथन विशेष स्थानपर आने पर चमत्कार का निर्माण हुआ है। लम्बे कथोपकथन पाठकों के मन में ऊब निर्माण न करके कथानक के अनुकूल कथानक विकास में महत्त्वपूर्ण सहयोग देते हैं। इस प्रकार कथोपकथन में उपयुक्तता, स्वाभाविकता,संक्षिप्तता,उद्देश्यपूर्णता,सम्बध्दता,अनुकूलता,मनोवैज्ञानिकता, भावात्मकता,सजीवता,तथा नाटकीययता आदि गुणों को ध्यान में रखकर उपन्यास में सार्थक कथोपकथन की निर्मिति करने में उपन्यासकार सफल हुये हैं।

पंचम अध्याय में मैंने` प्रिय शबनम ` उपन्यास के अन्तर्गत देश,काल तथा वातावरण का चित्रण प्रस्तुत किया है। उपन्यास मेंबम्बई महानगरीय जीवन के परिवेश का चित्रण है। साथ में कोटद्वार का भी चित्रण हुआ है। युगीन वातावरण के वर्णन के अंतर्गत निम्नवर्ग ,निम्नमध्यवर्ग तथा उच्चमध्यवर्ग की सामाजिक पारिवारिक तथा राजनैतिक चेतना का चित्रण ` प्रिय शबनम ` में प्रस्तुत किया गया है। देश,काल तथा वातावरण का मैंने दो भागों में विभाजित किया है - बाहरी वातावरण तथा मानसिक वातावरण। बाहरी वातावरण के अन्तर्गत महानगरीय वातावरण का चित्रण किया है। आवास,यातायात,होटल का वातावरण,मध्यवर्गीय वातावरण,अर्थ केन्द्रित रिश्ते,कस्बे का वातावरण, पार्टी तथा जेल का वातावरण,पारिवारिक आदि का चित्रण बाहरी वातावरण में रखा है। मानसिक या आन्तरिक वातावरण के अन्तर्गत कुण्ठित मनोवृत्ति, काल्पनिकता,द्विधामन:स्थिति,नारी स्वच्छन्दता,मोहका क्षण,स्नेह का वातावरण आदि का चित्रण किया है। महानगरीय समस्याओं का चित्रण करना तथा मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रण करना लेखक का मुख्य उद्देश्य रहा है। इस प्रकार लेखक ने देश काल तथा वातावरण के अन्तर्गत वर्णनात्मक सूक्ष्मता से विश्वसनीय चित्रण किया है। और वातावरण के अन्तर्गत बाह्य वातावरण और

मानसिक वातावरण की निर्मिति उपकरणात्मक सन्तुलन से की है।

भाषा-शैली का विस्तृत विवरण मैंने षष्ट अध्याय में दिया है। `प्रिय शबनम` उपन्यास में भाषा सम्बन्धी विविधता है। शब्दों के विविध स्वरूपों का विधान भाषा में सौन्दर्य लाने के लिए विविध उपकरणों का उपयोग, मुहावरों और कहावतों की समन्विति, वाक्यों की कलात्मक योजना तथा भाषा की युगानुरूप अभिव्यक्ति के कारण उनकी भाषा में सहजता और सौन्दर्य की प्रभोज्ज्वलता अनायास ही परिलक्षित होती है। पात्रानुकूल सूक्ष्म, सांकेतिक एवं पैनेपन से भरी भाषा अपने कथ्य को सम्प्रेषित करने में पूरी तरह सक्षम है। जहाँ तक शब्द प्रयोग का सम्बन्ध है `प्रिय शबनम` में खडी बोली के ही शब्द नहीं है, बल्कि पात्रों, उनकी परिस्थितियों, अनुभूतियों एवं विचारों के अनुरूप देशी विदेशी आदि समस्त स्त्रोतों से शब्दों का चयन हुआ है। `प्रिय शबनम` उपन्यास में उनके क्षेत्रों की स्थिति के अनुकूल भाषा में तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है। स्थानीय परिवेश एवं परिस्थिति विशेष का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए विकृत शब्दों का प्रयोग भी लेखकने किया है। बम्बइया हिन्दी के शब्दों के साथ मराठी, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, अंग्रेजी के विकृत शब्दों का प्रयोग भी अनेक मात्रा में हुआ है। भाषागत सौन्दर्य की अभिवृध्दि के लिए विभक्त शब्दों का प्रयोग लेखकने किया है। ध्वन्यार्थक, अपशब्द, नये रचित शब्दों का नया अर्थ देने में वे सफल हुये है।

भाषा-सौन्दर्य के विविध उपकरणों के अन्तर्गत लेखकने विशेषण, रूपक तथा उपमान का उपयोग किया है। शब्द शक्तियाँ, प्रतीक, बिम्ब, मुहावरें, कहावतें, सुक्तियाँ, वाक्य-विन्यास तथा मनोवैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग करके नये अर्थ बोध का निर्माण किया है।

`प्रिय शबनम` एक लम्बे पत्र के रूप में लिखी हुई अपने ढंग की अनूठी रचना है। पत्रात्मक शैली के उपयोग द्वारा लेखक ने नायक मंगल के अन्तर्मन में चल रहे संघर्षों, उलझनों का सीधा साक्षात्कार कराया है। पत्रात्मक शैली के

साथ लेखकने विश्लेषणात्मक,व्यंग्यात्मक,दृश्य,प्रतीकात्मक,निराधार प्रत्यक्षीकरण,आत्मकथात्मक ,पूर्व-दीप्ति ,नाटकीय संवाद,समय-विपर्यय तथा संकेतिक शैलियों से इसके शिल्प सौन्दर्य को और अधिक आकर्षक बना दिया है । इसी कारण ही कथा संश्लिष्ट एवं रोचक ढंग से अभिव्यक्त हुई है । कुल मिलाकर डॉ.देवेश ठाकुर की भाषा में अपने कथ्य को सार्थक एवं प्रभावी रूप में सम्प्रेषित करने की सामर्थ्य है ।

सप्तम अध्याय में मैंने ` प्रिय शबनम ` उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट किया है । देवेश जी की साहित्यिक दृष्टि तथा उनके व्यक्तित्व की प्रधान रेखाएँ इसमें अंकित हो गई है ।` प्रिय शबनम ` के उद्देश्य के सन्दर्भ में व्यक्त समीक्षकों के कुछ उद्गार मैंने इसमें दिये है । लेखक का पहला उद्देश्य रहा है कि मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की कहानी प्रस्तुत करना । आधुनिक काल में चल रहे स्त्री-पुरूष सम्बन्धो का लेखकने विस्तृत ब्योरा दिया है । लेखक ने दो-प्रेमियों के गुरू-छात्रा सम्बन्ध में आदर्श दिखाया है । उच्छृंखल नारी रूप भी लेखकने चित्रित किया है जिसके कारण उपन्यास में संघर्ष निर्माण होता है ।लेखक ने कुण्ठाग्रस्त व्यक्ति का मनोद्घाटन करने का काम अपने इस उपन्यास में किया है । महानगरीय समस्याओं को पाठक के सामने रखने में लेखक सफल हुये हैं । उसके अन्तर्गत आवास, यातायात की समस्या,वसई की बस्ति का वर्णन,वरसोवा के सागर तट का वर्णन आदि को लेखक ने सफलता चित्रित किया है । शहर में होटल-क्लब-संस्कृति के उदय की ओर ईशारा किया है । पार्टी का वातावरण लेखकने सफलता से चित्रित किया है । मार्क्सवादी वैचारिकता का लेखक ने पाठकों के सामने सफलता से पेश किया है । पार्टी के कार्यकर्ताओं के दो रूप दो पात्रों के माध्यम से पेश किये हैं । उपन्यासकार ` प्रिय शबनम ` में निम्नवर्ग ,मध्यवर्ग तथा उच्चमध्यवर्ग के परिवेश तथा परिस्थिति को चित्रित किया है । वर्गगत चित्रण में लेखकने वर्गगत वैचारिकता को प्रस्तुत किया है । इन सभी वर्ग के लोगों का रहन-सहन ,आचार-विचार आदि का यथार्थ चित्रण लेखकने किया है । उपन्यास में सौन्दर्य लाने के लिए तथा अपना प्रकृति प्रेम प्रकट करने के लिए देवश जी प्रकृति चित्रण यथा समय

किया है । प्रकृति के साथ मानसिक द्वन्द्व को भी लेखक ने चित्रित किया है । पात्रों के भाव प्रकृतिपर आरोपित करने में लेखक सफल हुये हैं । इस प्रकार संराश रूप में लेखक मध्यवर्गीय व्यक्ति के अन्तर्मनोवृत्ति को खोलने में सफल हुये हैं । भावुकता और शारीरिक आकर्षण का एक दुर्बल क्षण व्यक्ति को नीचे गिरा सकता है इससे लेखकने सन्देश दिया है कि मोह में पडते समय सोच लिया जाय तो जिन्दगी बन सकती है । समाज में क्रान्ति लाने के लिए लोगों का मानस परिवर्तन आवश्यकता है । यह कार्य छोटे स्तर पर भी प्रारंभ किया जा सकता है । उपन्यास के अन्त में लेखकने यही ` आस्था ` प्रकट की है ।